



## लोमड़ी चुंबकीय क्षेत्र से दूरी नापती हैं

एक ताज़ा अध्ययन का निष्कर्ष है कि लोमड़ियां पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग दूरी का अंदाज़ लगाने के लिए करती हैं। यह थोड़ा आश्चर्यजनक है क्योंकि चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग सामान्यतः दिशा का अनुमान लगाने में किया जाता है। यह तो सर्वविदित है कि पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की दिशा मोटे तौर पर उत्तर-दक्षिण होती है। तो लोमड़ी इससे दूरी का अनुमान कैसे लगाती होगी?

जर्मनी के डुइसबर्ग-एसेन विश्वविद्यालय के हायनेक बुर्डा ने चेक गणराज्य में अवलोकन किया था कि लोमड़ियां अपने शिकार पर आम तौर पर उत्तर-पूर्व दिशा में झपटती हैं। वे यह तो जानते थे कि गाएं प्रायः पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के अनुसार खड़ी होती हैं। अतः बुर्डा ने विचार किया कि हो न हो लोमड़ी की झपटने की दिशा भी पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की दिशा के सापेक्ष तय होती हो।

शिकार करते समय लोमड़ी हवा में ऊंची छलांग लगाती हैं और सीधे अपने शिकार पर कूदती हैं। बुर्डा और उनके दल ने पाया कि जब लोमड़ी को शिकार नज़र आ रहा होता है, तो वे किसी भी दिशा से कूद जाती हैं मगर जब शिकार ओझल होता है तो हमेशा उत्तर-पूर्व की ओर कूदती हैं। इस

दिशा में किए गए हमले 72 प्रतिशत मर्तबा सफल रहते हैं जबकि अन्य दिशाओं में किए गए हमले मात्र 18 प्रतिशत मर्तबा।

बुर्डा के दल के सारे सदस्यों का यही अवलोकन था मगर वर्जीनिया टेक के जॉन फिलिप्स ने सुझाया कि हो सकता है कि लोमड़ी पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से मात्र दिशा का नहीं बल्कि दूरी का भी अनुमान लगाती हो। अब बुर्डा और फिलिप्स का मत है कि लोमड़ी सबसे बढ़िया शिकार तब करती है जब हर बारी उसे एक ही दूरी की छलांग लगानी पड़े। बुर्डा का कहना है कि लोमड़ी को अपने आंख के पर्दे यानी रेटिना पर छाया की एक वलय दिखाई देती है। यह वलय उत्तर की ओर सबसे गहरी होती है और किसी भी छाया की तरह एक निश्चित दूरी पर होती है। तो लोमड़ी तब तक आगे बढ़ती है जब तक कि छाया और शिकार से आने वाली आवाज़ पूरी तरह एक लाइन में न हो जाए। इस स्थान पर वह अपने शिकार से एक निश्चित दूरी पर होती है और छलांग लगा देती है।

अन्य वैज्ञानिकों का कहना है कि वैसे तो यह विचार अटकलनुमा है मगर असंभव नहीं है। इसकी जांच के लिए और प्रयोग लाज़मी हैं। (स्रोत फीचर्स)